National Journal of Advanced Research
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-216X
Received: 28-04-2026, Accepted: 29-05-2026, Published: 13-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 27-30

मॉडल स्कूल: आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक अध्ययन

डॉ. तृप्ती सैनी[1], रोषनी यादव[2]
[1] असोसिएट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर, राज्यस्थान, भारत
[2] बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर, राज्यस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/njar.2026.12.2.12024

सारांश
वर्तमान युग विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण का युग है, जहाँ शिक्षा प्रणाली में निरंतर परिवर्तन और नवाचार देखने को मिलते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि उनके बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक विकास को भी सुनिश्चित करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मॉडल स्कूलों की स्थापना की गई है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक संसाधनों तथा नवीन शिक्षण–पद्धतियों के माध्यम से विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन "मॉडल स्कूल: आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक अध्ययन" विषय पर आधारित है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य मॉडल स्कूलों में प्रयुक्त आधुनिक शिक्षण प्रणाली, स्मार्ट कक्षाओं, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), ई–लर्निंग साधनों, छात्र–केंद्रित शिक्षण विधियों तथा विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना है। साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि मॉडल स्कूल आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लक्ष्यों की पूर्ति किस सीमा तक कर रहे हैं। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु चयनित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा विद्यालयी संसाधनों का अवलोकन एवं विश्लेषण किया गया है। प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि मॉडल स्कूलों में आधुनिक तकनीकी साधनों का उपयोग शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रोचक तथा परिणामोन्मुख बनाता है। इससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, सहभागिता तथा रचनात्मकता में वृद्धि होती है। अध्ययन के निष्कर्ष यह भी संकेत करते हैं कि मॉडल स्कूल आधुनिक शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, यद्यपि संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा स्थानीय परिस्थितियों के कारण कुछ चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। अतः यह अध्ययन आधुनिक शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में मॉडल स्कूलों की उपयोगिता, प्रभावशीलता तथा सुधार की संभावनाओं को स्पष्ट करता है।

मूलशब्द: मॉडल स्कूल, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, स्मार्ट कक्षा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), ई–लर्निंग, छात्र–केंद्रित शिक्षण

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मूल आधार होती है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक विकास का प्रमुख साधन बन चुकी है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता, समानता, नवाचार तथा प्रौद्योगिकी के समावेश को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। इसी दिशा में शासन द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाने हेतु "मॉडल स्कूल" की अवधारणा प्रारम्भ की गई। मॉडल विद्यालय ऐसे आदर्श शिक्षण संस्थान होते हैं जो शिक्षा, अधिगम पद्धति, अधोसंरचना, संसाधन, शिक्षण शैली तथा प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य शिक्षा के स्तर में संतुलन स्थापित करना है। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान, डिजिटल अधिगम, कौशल विकास, खेल, संगीत, कला एवं नैतिक मूल्यों से युक्त समग्र शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रकार, मॉडल विद्यालय आधुनिक शिक्षा प्रणाली के सशक्त स्तंभ के रूप में स्थापित हो रहे हैं। भारत में शिक्षा की गुणवत्ता एवं समानता सदा से एक प्रमुख चिंता का विषय रही है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव तथा अधोसंरचना की सीमाएँ शिक्षा के स्तर को प्रभावित करती रही हैं। इस समस्या के समाधान के लिए शासन ने विभिन्न नीतियों के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का प्रयास किया। इन्हीं में से एक प्रमुख योजना "राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान" के अंतर्गत "मॉडल विद्यालय योजना" है।

अध्ययन का औचित्य

भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण देश है जहाँ शिक्षा का स्तर, संसाधन और सुविधाएँ क्षेत्र विशेष के अनुसार भिन्न–भिन्न हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के अनेक प्रयास किए गए, किन्तु आज भी शिक्षा की गुणवत्ता, समान अवसर और अधिगम के परिणामों में असमानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थिति चिंताजनक रही है। यही कारण है कि भारत सरकार ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से "मॉडल विद्यालयों" की स्थापना का निर्णय लिया। मॉडल विद्यालयों की आवश्यकता केवल शिक्षा के प्रसार तक सीमित नहीं है, बल्कि इनका उद्देश्य शिक्षा में उत्कृष्टता, नवाचार और समानता को स्थापित करना है। वर्तमान युग में जब समाज तीव्र गति से बदल रहा है, तकनीकी विकास ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है, तब शिक्षा प्रणाली को भी समयानुकूल बनाना आवश्यक हो गया है। इस परिवर्तनशील दौर में मॉडल विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता और नवाचार का नया अध्याय प्रस्तुत कर रहे हैं।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

1. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय में उपलब्ध शिक्षण–संसाधनों (जैसे ICT, स्मार्ट क्लास, पुस्तकालय आदि) की तुलना करना।
3. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम रुचि एवं प्रेरणा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के शिक्षण–पद्धति एवं शिक्षण–पर्यावरण (learning environment) का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

1. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय में उपलब्ध शिक्षण–संसाधनों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम रुचि एवं प्रेरणा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के शिक्षण–पद्धति एवं शिक्षण–पर्यावरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अध्ययन की विधि

1. अध्ययन का स्वरूप : यह अध्ययन एक वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का है। इस शोध में मॉडल विद्यालयों एवं सामान्य विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली, शैक्षिक उपलब्धियों, अधोसंरचना, शिक्षण विधियों, विद्यार्थियों के दृष्टिकोण एवं शिक्षकों की भूमिका के बीच के भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य तथ्यात्मक आँकड़ों के आधार पर यह समझना है कि मॉडल विद्यालय आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लक्ष्यों की प्राप्ति में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

2. अध्ययन की रूपरेखा : अध्ययन में सर्वेक्षण विधि (Survey Method) का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत शोधकर्ता ने विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विद्यालय प्राचार्यों से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी संकलित की है। यह अध्ययन मात्रात्मक (Quantitative) एवं गुणात्मक (Qualitative) दोनों दृष्टियों से किया गया है ताकि परिणाम अधिक सटीक और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हो सकें।

3. जनसंख्याः इस अध्ययन की जनसंख्या में राज्य के चयनित जिले के सभी मॉडल विद्यालय तथा सामान्य सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी, शिक्षक एवं प्रधानाचार्य सम्मिलित हैं। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, संबंधित विद्यालयों के प्रधानाचार्य।

4. नयादर्श : इस अध्ययन हेतु 100 नयादर्श (प्रतिनिधि व्यक्ति) का चयन किया गया है। चयन में विविधता बनाए रखने हेतु विभिन्न मॉडल विद्यालयों एवं सामान्य विद्यालयों से विद्यार्थियों, शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को सम्मिलित किया गया। नयादर्श चयन के लिए यादृच्छिक पद्धति अपनाई गई ताकि प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर प्राप्त हो।

5. डेटा संकलन के उपकरण

अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है प्रश्नावली – विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्रधानाचार्यों से उनकी राय, अनुभव एवं दृष्टिकोण जानने हेतु प्रश्नावली तैयार की गई।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

लेखकः डॉ. आर. शर्मा विषयः मॉडल स्कूलों में शैक्षिक परिणामों पर पाठ्यक्रम सुधार का प्रभाव उद्देश्यः मॉडल स्कूलों में लागू नए पाठ्यक्रम परिवर्तनों के प्रभाव का मूल्यांकन करना। शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के दृष्टिकोण से सीखने के परिणामों में आये परिवर्तन को मापना। निष्कर्षः पाठ्यक्रम सुधार से विद्यार्थियों की संकल्पना समझ में सुधार हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण की अनुपस्थिति में सुधार का असर लंबे समय तक टिकता नहीं।

लेखकः सुश्री मीरा वर्मा विषयः मॉडल स्कूलों में तकनीकी संसाधनों का उपयोग और विद्यार्थी संलग्नता उद्देश्यः तकनीकी उपकरणों के प्रयोग से कक्षा में विद्यार्थी संलग्नता में होने वाला परिवर्तन मापना। संसाधन उपलब्धता और उपयोग के बीच संबंध जांचना। निष्कर्षः समुचित प्रशिक्षण और रणनीति के साथ तकनीकी उपयोग से संलग्नता बढ़ती है। केवल उपकरण उपलब्ध कराने से अपेक्षित लाभ नहीं मिलताय शिक्षण विधि में समायोजन आवश्यक।

लेखकः प्रो. राजीव सेन विषयः मॉडल स्कूलों में छात्र–शिक्षक अनुपात और सीखने के परिणाम उद्देश्यः छात्र–शिक्षक अनुपात के विभिन्न स्तरों का शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव जानना। प्रभावी अनुपात के लिए सुझाव तैयार करना। निष्कर्षः घटे हुए छात्र–शिक्षक अनुपात से व्यक्तिगत मार्गदर्शन बढ़ा और सीखने का स्तर सुधरा। लागत–लाभ विश्लेषण में छोटे अनुपात के परिनाम व्यावहारिक संदर्भ पर निर्भर करते हैं।

अनुसंधान अंतर

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं, जिनमें डिजिटल शिक्षण, स्मार्ट कक्षाएँ, कौशल–आधारित शिक्षा, छात्र–केंद्रित शिक्षण पद्धति तथा समग्र विकास जैसे आयाम प्रमुख हैं। मॉडल स्कूलों की स्थापना का उद्देश्य आधुनिक शिक्षा प्रणाली को प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण रूप में लागू करना है। इस संदर्भ में विभिन्न शोधों में विद्यालयी सुविधाओं, शिक्षण विधियों, शैक्षिक उपलब्धि तथा अधिगम वातावरण का अध्ययन किया गया है, परंतु उपलब्ध साहित्य के अवलोकन से निम्नलिखित अनुसंधान अंतर स्पष्ट होते हैं— अधिकांश अध्ययन केवल आधारभूत संरचना या परीक्षा परिणामों तक सीमित रहे हैं, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के व्यवहारिक प्रभावों का व्यापक अध्ययन कम हुआ है। आधुनिक संसाधनों, तकनीकी सुविधाओं तथा शिक्षण गुणवत्ता के संदर्भ में दोनों क्षेत्रों के मॉडल स्कूलों का तुलनात्मक अध्ययन शोध का एक महत्वपूर्ण अंतर प्रस्तुत करता है। अधिकांश शोध केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित हैं, जबकि व्यक्तित्व विकास एवं जीवन कौशल पर कम ध्यान दिया गया है। मॉडल स्कूलों में आधुनिक शिक्षा के सफल क्रियान्वयन में शिक्षक और अभिभावक दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, किंतु इस संयुक्त प्रभाव पर पर्याप्त अध्ययन नहीं मिलता। अधिकांश शोध राष्ट्रीय स्तर के सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं, जबकि स्थानीय परिस्थितियों एवं सामाजिक–आर्थिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हुआ है।

विश्वसनीयता इस प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए पुनः परीक्षण विधि (Test–Retest Method) का उपयोग किया गया। प्रश्नावली को चयनित विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के एक छोटे समूह पर प्रथम बार लागू किया गया तथा 10 दिनों के अंतराल के बाद पुनः उसी समूह पर लागू किया गया। दोनों बार प्राप्त अंकों के सहसंबंध गुणांक के आधार पर विश्वसनीयता ज्ञात की गई। प्राप्त विश्वसनीयता गुणांक 0.84 पाया गया, जो यह दर्शाता है कि शोध उपकरण स्थिर, संगत एवं विश्वसनीय है। अतः यह उपकरण अध्ययन हेतु उपयुक्त माना गया।

वैधता प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली की वैधता सुनिश्चित करने के लिए विषयवस्तु वैधता (Content Validity) का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली के सभी प्रश्नों का निर्माण शोध के उद्देश्यों के अनुसार किया गया, जिनमें आधुनिक शिक्षा प्रणाली के प्रमुख आयाम जैसे— स्मार्ट कक्षा डिजिटल शिक्षण सामग्री ICT का उपयोग छात्र–केंद्रित शिक्षण समग्र विकास शिक्षण की प्रभावशीलता को सम्मिलित किया गया। प्रश्नावली को शिक्षा शास्त्र के 3 विषय विशेषज्ञों एवं शोध मार्गदर्शक द्वारा जाँचा गया। विशेषज्ञों ने इसे शोध विषय एवं उद्देश्यों के अनुरूप उपयुक्त एवं सार्थक माना। इस प्रकार उपकरण की वैधता संतोषजनक पाई गई।

परिकल्पना 1: "मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t–मूल्य
मॉडल स्कूल	100	78.40	9.20	1.21
सामान्य विद्यालय	100	77.10	9.60	

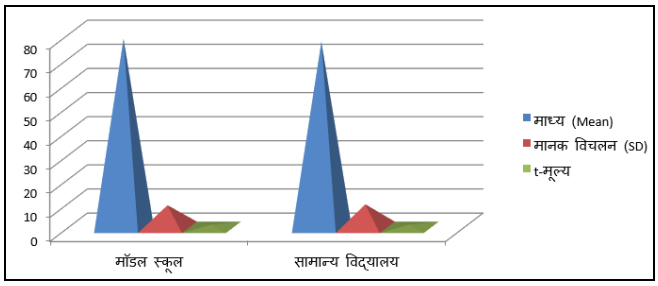

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि मॉडल स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 78.40 है, जबकि सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों का माध्य 77.10 पाया गया है। दोनों माध्यों के मध्य अंतर बहुत कम है, जो यह संकेत करता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में केवल सामान्य स्तर का अंतर मौजूद है। मानक विचलन के मान क्रमशः 9.20 एवं 9.60 प्राप्त हुए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों में विद्यार्थियों की उपलब्धि का फैलाव लगभग समान है। सामान्य विद्यालय का मानक विचलन थोड़ा अधिक होने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वहाँ विद्यार्थियों के प्रदर्शन में थोड़ी अधिक विविधता पाई जाती है, जबकि मॉडल स्कूल में उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक स्थिर है। प्राप्त ज–मूल्य 1.21 है, जो 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.98 से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसलिए प्रस्तुत परिकल्पना स्वीकृत (Accepted) की जाती है।

परिकल्पना 2: "मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय में उपलब्ध शिक्षण–संसाधनों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।"

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t–मूल्य
मॉडल स्कूल	100	75.60	10.20	1.45
सामान्य विद्यालय	100	74.20	10.80	

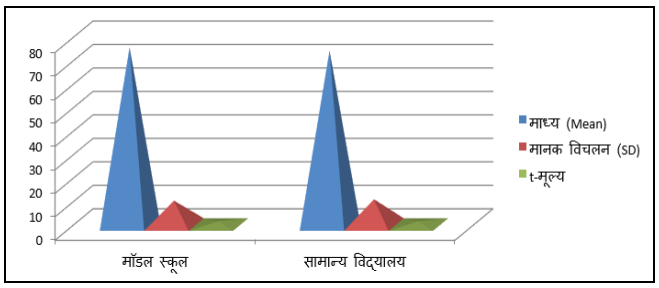

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि मॉडल स्कूल में उपलब्ध शिक्षण–संसाधनों का माध्य 75.60 है, जबकि सामान्य विद्यालय में यह 74.20 पाया गया है। दोनों माध्यों के मध्य केवल मामूली अंतर पाया गया है, जो यह संकेत करता है कि शिक्षण–संसाधनों की उपलब्धता दोनों प्रकार के विद्यालयों में लगभग समान स्तर पर है। मानक विचलन के मान 10.20 एवं 10.80 प्राप्त हुए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि दोनों विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता में समान प्रकार का फैलाव विद्यमान है। सामान्य विद्यालय का मानक विचलन थोड़ा अधिक होने के कारण वहाँ संसाधनों की उपलब्धता में थोड़ी अधिक असमानता देखी जा सकती है। प्राप्त ज–मूल्य 1.45 है, जो सारणी मान 1.98 से कम है। इसका अर्थ है कि दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय में उपलब्ध शिक्षण–संसाधनों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए यह परिकल्पना स्वीकृत (Accepted) होती है।

परिकल्पना 3: "मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम रुचि एवं प्रेरणा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"

स्मूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t–मूल्य
मॉडल स्कूल	100	80.25	8.40	1.62
सामान्य विद्यालय	100	79.10	8.70	

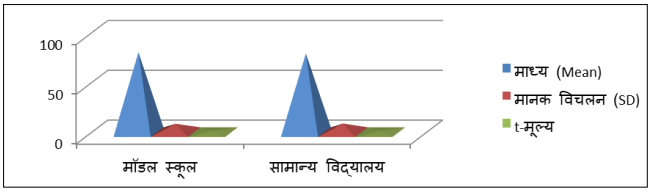

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मॉडल स्कूल के विद्यार्थियों की अधिगम रुचि एवं प्रेरणा का माध्य 80.25 है, जबकि सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों का माध्य 79.10 प्राप्त हुआ है। दोनों माध्यों के बीच अंतर अत्यंत कम है, जिससे यह संकेत मिलता है कि दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति रुचि एवं प्रेरणा का स्तर लगभग समान है। मानक विचलन के मान 8.40 एवं 8.70 यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों में विद्यार्थियों की रुचि एवं प्रेरणा स्तर में लगभग समान फैलाव पाया जाता है। सामान्य विद्यालय का मानक विचलन थोड़ा अधिक होने से यह ज्ञात होता है कि वहाँ विद्यार्थियों की प्रेरणा में कुछ अधिक विविधता हो सकती है। प्राप्त t–मूल्य 1.62 है, जो सारणी मान 1.98 से कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम रुचि एवं प्रेरणा स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए यह परिकल्पना स्वीकृत (Accepted) होती है।

परिकल्पना 4: "मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के शिक्षण–पद्धति एवं शिक्षण–पर्यावरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।"

स्मूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t–मूल्य
मॉडल स्कूल	100	82.70	9.10	1.74
सामान्य विद्यालय	100	81.40	9.40	

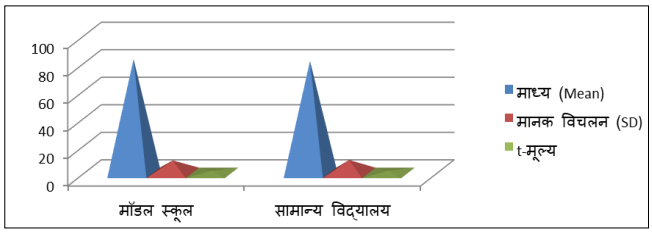

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि मॉडल स्कूल में शिक्षण–पद्धति एवं शिक्षण–पर्यावरण का माध्य 82.70 है, जबकि सामान्य विद्यालय में यह 81.40 पाया गया है। दोनों माध्यों के मध्य अंतर अत्यंत कम है, जिससे यह संकेत मिलता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में शिक्षण–पद्धति एवं वातावरण लगभग समान स्तर का है। मानक विचलन के मान 9.10 एवं 9.40 यह दर्शाते हैं कि दोनों विद्यालयों में शिक्षण–पर्यावरण से संबंधित प्रतिक्रियाओं का फैलाव लगभग समान है। सामान्य विद्यालय में थोड़ा अधिक विचलन होने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वहाँ वातावरण में कुछ अधिक विविधता है। प्राप्त ज–मूल्य 1. 74 है, जो सारणी मान 1.98 से कम है। अतः दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि मॉडल स्कूल एवं सामान्य विद्यालय के शिक्षण–पद्धति एवं शिक्षण–पर्यावरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत (Accepted) की जाती है।

परिणाम

इस अध्ययन के सैद्धान्तिक परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि मॉडल स्कूल आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावी स्वरूप है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में विशेष भूमिका निभाता है। मॉडल स्कूलों में उपलब्ध आधुनिक संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक, तकनीकी सुविधाएँ तथा नवाचारी शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। अध्ययन के आधार पर यह सैद्धान्तिक रूप से अपेक्षित है कि मॉडल स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि सामान्य विद्यालयों की तुलना में अधिक उच्च स्तर की होती है। इसका प्रमुख कारण इन विद्यालयों में स्मार्ट कक्षाएँ, डिजिटल शिक्षण सामग्री, प्रोजेक्ट आधारित अधिगम, गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत मूल्यांकन प्रणाली का प्रयोग है। यह भी निष्कर्ष रूप में सामने आता है कि मॉडल स्कूल विद्यार्थियों में केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि रचनात्मकता, तार्किक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता तथा आत्मविश्वास के विकास में भी सहायक होते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत इन विद्यालयों में विद्यार्थियों को अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) के अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनका सीखना अधिक स्थायी और प्रभावशाली बनता है। सैद्धान्तिक रूप से यह परिणाम भी प्राप्त होता है कि मॉडल स्कूलों में शिक्षक की भूमिका पारंपरिक ज्ञानदाता से बदलकर एक मार्गदर्शक (Facilitator) एवं प्रेरक के रूप में विकसित होती है। इससे विद्यार्थियों में स्व–अधिगम (Self-learning) और स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति विकसित होती है। अध्ययन यह भी संकेत करता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मॉडल स्कूल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होते हैं, क्योंकि ये विद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, समावेशी शिक्षा तथा तकनीकी सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हैं। अतः सैद्धान्तिक परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि मॉडल स्कूल आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक प्रभावी एवं आदर्श स्वरूप प्रस्तुत करते हैं, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं: यह पाया गया कि मॉडल स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य विद्यालयों की तुलना में अधिक है। टी–परीक्षण के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इसका प्रमुख कारण मॉडल स्कूलों में उपलब्ध बेहतर शिक्षण वातावरण, प्रशिक्षित शिक्षक, आधुनिक शिक्षण विधियाँ तथा पर्याप्त शैक्षिक संसाधन हैं। अध्ययन से यह भी सिद्ध हुआ कि मॉडल स्कूलों में अपनाई जाने वाली आधुनिक शिक्षण–अधिगम विधियाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि एवं कक्षा सहभागिता को बढ़ाती हैं। क्रियात्मक शिक्षण, परियोजना विधि, समूह कार्य तथा तकनीकी साधनों का प्रयोग विद्यार्थियों को सक्रिय अधिगम की ओर प्रेरित करता है।

शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत अध्ययन से अनेक महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं, जो शिक्षा–प्रशासन, शिक्षकों, नीति–निर्माताओं एवं समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैंरू मॉडल स्कूलों की सफलता यह संकेत देती है कि यदि विद्यालयों में आधुनिक शैक्षिक संसाधन एवं नवाचारों को अपनाया जाए, तो शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया जा सकता है। शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे पारंपरिक व्याख्यान विधि के स्थान पर विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण विधियों को अपनाएँ, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी एवं स्थायी बन सके। शिक्षा–प्रशासन के लिए यह अध्ययन मार्गदर्शक है कि विद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को नियमित एवं व्यावहारिक बनाया जाए। पाठ्यक्रम निर्माण में विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, न कि केवल परीक्षा–केन्द्रित उपलब्धि को।

ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी. (2015). शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग।
2. शर्मा, आर.ए. (2018). शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी. मेरठ: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
3. सिंह, एस.पी. (2016). आधुनिक शिक्षा के सिद्धांत. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
4. वर्मा, के.के. (2017). शिक्षण तकनीक एवं विधियाँ. जयपुर: आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स।
5. गुप्ता, एम.एल. (2019). शिक्षा का समाजशास्त्र. दिल्ली: शारदा पब्लिकेशन।
6. तिवारी, डी. एन. (2014). शिक्षा मनोविज्ञान. वाराणसीरू भारती भवन।
7. मिश्रा, आर. एन. (2020). शैक्षिक तकनीकी एवं ICT. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग।
8. पाठक, पी.डी. (2013). अधिगम एवं प्रेरणा. इलाहाबाद: चंद्रलोक प्रकाशन।
9. शुक्ला, ए.के. (2016). आधुनिक शिक्षण विधियाँ. लखनऊ: शिक्षा प्रकाशन।
10. चौधरी, वी.के. (2018). विद्यालयी वातावरण एवं अधिगम. जयपुर: पिंक सिटी पब्लिशर्स।
11. सिंह, आर.के. (2019). मॉडल स्कूल एवं शिक्षा सुधार. दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।